

2018-19

कोर्स वर्क संगीत  
उच्च पेंपा संगीत

अधिकतम अंक 100

1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाएँ - काकु, आइ, धुआइ, बिआइ, आशा राग, मेजरटोन, मिजरटोन, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्त, नृत्य, पांडव, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के प्रकार।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालीन गान्धकारों की धुक्ति विज्ञान पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत/नृत्य में रस का महत्व।
7. इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित पिपयों का अध्ययन :- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, टुमरी, कजरी, चैती, होंरी, मल्ल, गुजल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का अन्तर्भाव।
9. निम्न गान्धकारों एवं उनके गान्धों का परिचय -  
भरत - नाट्यशास्त्र, नंदिकेश्वर - अभिनय दर्पण, शंकरादेव - संगीतरत्नाकर, अहोदल - संगीतपारिजात
10. राग ध्याज तथा राग रागिणी चित्रीकरण। वृत्त हस्त का अध्ययन।

Dean  
SCHOOL OF HEAD  
SCHOOL OF HEAD  
SCHOOL OF HEAD  
SCHOOL OF HEAD

Principal  
SCHOOL OF HEAD  
SCHOOL OF HEAD  
SCHOOL OF HEAD



1. नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नाटक-नाटिका भेद।
2. पारिभाषाएँ - काकु, आड़, कुआड़, विआड़, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपके भेद, नाट्य, नृत्य, नृत्य, तांडव, ~~क~~ लास्य, पेशकार, कायदा, रेखा, लम्बी, लड़ी।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के धराने एवं विशेषताएँ।
4. वैदिक काल से मध्यकाल तक, भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन व्यक्तियों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।
7. इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ, ख्याल, चमर, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, हुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजले आदि का अध्ययन।
8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)
9. निम्न लिखित व्यक्तियों एवं उनके गुणों का परिचयात्मक अध्ययन: -  
(i) भरत-नाट्यशास्त्र (ii) नंदकिशोर-अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव-संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबिल-पारिजात, (v) धनन्जय-दशकंपक।
10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रिकरण। नृत्य हस्त का अध्ययन।
11. ताल के दशप्राणों का अध्ययन।

प्रो. वी. जे. मणिक  
24/9/2020  
अध्यक्ष, B.D. College  
Head of Department (Dance)  
V.R.G. O.S.P.G. College, Awar College



2018-19

कोर्स का संगीत  
उच्च पाठ्य संगीत

अधिकारिता अंक

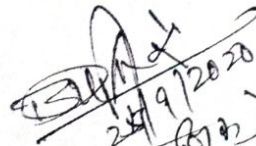
1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाएँ - काकु, आइ, कुआइ, बिआइ, आशय राग, मेजरलेन, मिजरले, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्य, नांद्य, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के घटले।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालीन गान्यकारों की धुनि विधाएँ पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत नृत्य में रस का महत्व।
7. इलैक्ट्रोनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन - ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरगट, चतुष्ठा, दुमरी, कजरी, चैती, होरी, गजल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का अध्ययन।
9. निम्न गान्यकारों एवं उनके गान्यों का परिचय -  
भरत - नाट्यशास्त्र, जंदिकेश्वर - अभिनय दर्पण, शंकरदेव - संगीतरत्नकर,  
अहोबल - संगीतपारिजात
10. राग ध्यान तथा राग रागिणी चित्रीकरण। नृत्य हस्त का अध्ययन।

Dean  
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION  
Jawahar University Gwalior (M.P.)

Dr. Ranjay Bhatnagar  
Professor  
M.P.



1. नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नाटक-नाटिका भेद।
2. परिभाषाएं - काकु, आड, कुआड, बिआड, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपके भेद, नाट्य, नृत्य, मृत्य, तांडव, लास्य, पेशकार, कायदा, रेखा, लंगी, लड़ी।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के धराने एवं विशेषताएं।
4. वैदिक काल से मध्यकाल तक भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन गृथकारों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।
7. इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ, रव्याल, चमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजले आदि का अध्ययन।
8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)
9. निम्नलिखित गृथकारों एवं उनके गृथों का परिचयात्मक अध्ययन: -  
(i) भरत - नाट्यशास्त्र (ii) नंदकिशोर - अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव - संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबिल - पारिजात, (v) धनञ्जय - दशकंपक।
10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रिकरण। नृत्य हस्त का अध्ययन।
11. ताल के दशप्राणों का अध्ययन।

  
24/9/2020  
(प्रो. वी. डी. मणिक)  
अध्यक्ष, शिक्षण विभाग  
Head of Department (Music)  
V.R.G. Girls P.G. College, Lower Calcutta